Page-1

Course-07
Unit-3-Pedagogy of
Social Science

Topic :- 'Action Research'

क्रियात्मक अनुसंधान- अर्थ, प्रकार, उद्देश्य एवं अन्य उल्लेखनीय तथ्य ।

क्रियात्मक अनुसंधान, दो शब्दों से मिलकर बना है — क्रियात्मक तथा अनुसंधान, इसके लिये अंग्रेजी में ~~Research~~ Action Research = 'Action + Research' शब्दों को मिलाकर बने शब्दों का प्रयोग होता है और इसका विश्लेषण — Re+Search और Action शब्दों से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ — क्रिया आधारित अन्वेषण से है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "क्रियात्मक अनुसंधान क्रियाओं की कार्यपद्धति में सुधार एवं विकास करने का एक प्रमुख एवं महत्वपूर्ण साधन है।"

'कार्टर वी॰ गुड' महोदय के अनुसार, "क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों, एवं प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों तथा कार्यों में सुधार लाने के लिए किया जाता अनुसंधान है।"

क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकार —

(1) निदानात्मक क्रियात्मक अनुसंधान — इस अनुसंधान के द्वारा किसी समस्या अथवा परिस्थिति के कारण का विश्लेषण करता है।

(2). सहभागीय क्रियात्मक अनुसंधान — सहभागीय क्रियात्मक अनुसंधान में सर्वेक्षण करने की प्रवृत्ति होती है, ताकि इसमें अधिक से अधिक विद्यार्थी भाग ले सकें।

(3) आनुभविक क्रियात्मक अनुसंधान — इस अनुसंधान में कार्यों का लेखा-जोखा रखना, परिणाम का अभिलेख रखना, तथा इन दोनों कार्यों का सम्पादन किया जाता है।

(4) प्रयोगात्मक क्रियात्मक अनुसंधान — इस अनुसंधान में

P.T.O —

Oxford

शोध कार्यों में कुछ तत्वों को नियंत्रित रखा जाता है तथा इसको मुक्त छोड़ दिया जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य — इसके निम्न लिखित उद्देश्य अग्रलिखित हैं —

(i) क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य कार्य विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार तथा विकास करना

(ii) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शिक्षा के सिद्धान्तों का परीक्षण करना।

(iii) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, प्रबंधक तथा निरीक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करना

(iv) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा विद्यालय की परम्परागत रूढ़िवादिता एवं यांत्रिक वातावरण को समाप्त करना।

(v) इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य विद्यालय की उन्नति एवं छात्रों का सर्वांगीण विकास करना।

(vi) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा विद्यार्थियों, शिक्षकों को उनको उनके दोषों से अवगत कराकर उन्हें दूर करने का उपाय करना।

क्रियात्मक अनुसंधान की प्रमुख विशेषताएँ —

— इसकी पहली विशेषता है कि यह स्थानीय लोगों के अध्ययन तक सीमित रहता है।

— इसकी विशेषता - जनतांत्रिक भावना पर समस्या समाधान।

— तीसरी विशेषता इसका अध्ययन क्षेत्र व्यापक क्षेत्र है।

— तत्कालिक अध्ययन, तथ्यपरक अध्ययन, तात्कालिक समस्याओं का सुधार एवं समाधान, व

— तात्कालिक समस्याओं का मूल्यांकन अध्ययन है।

— यह एक प्रकार का व्यवहारिक अनुसंधान तथा अनुभव पर आधारित शोध अनुसंधान है।

15/06/2020

Page-3

क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व —

इसकी मुख्य निम्नलिखित आवश्यकता एवं महत्व है —

(1) कक्षा या विद्यालय की समस्याओं, गतिविधियों, क्रियाकलापों का अध्ययन एवं निराकरण हेतु।

(2) जो व्यक्ति अनुसंधान में उसे उसकी अपनी समस्याओं को सुलझाने हेतु

(3) विद्यालयों की रूढ़िवादिता एवं परम्परागत क्रिया-पद्धति में सुधार एवं परिवर्तन हेतु

(4) शिक्षा के प्रशासकों, प्रबंधकों एवं निरीक्षकों के कार्य की दिशा एवं पद्धति के ज्ञान में वृद्धि हेतु।

(5) छात्रों के निष्पत्ति (Performance Level ~~& Aspiration Level~~ स्तर Aspiration Level) एवं आकांक्षा स्तर में वृद्धि हेतु।

(6) इसके द्वारा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मध्य सामाजिक कारणों से आई हुई असुविधाओं को दूर करने में।

(7) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा छात्रों की उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जाता है।

(8) इसके द्वारा पाठ्यक्रम के विकास ~~[illegible]~~ में सहायता मिलता है।

(9) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शिक्षकों को उनके उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाने में।

(10) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा छात्रों के पिछड़ेपन एवं अपराध जैसी समस्याओं को दूर करने सहायता मिलता है।

क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र एवं समस्याएँ —

क्रियात्मक अनुसंधान का मूल कार्य — विद्यालयों की समस्याओं का समाधान करके उसकी कुशलता उन्नत करना। इसीलिए इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है और इसमें निम्नलिखित समस्याओं को शामिल किया जा सकता है —

~~[illegible]~~ सम्बन्धित समस्याएँ —

(1) बाल व्यवहार से

P.T.O.—

1/M 13/04

बाल व्यवहार से सम्बन्धित समस्याओं (Problems) के अन्तर्गत छात्रों से जुड़ी समस्यायें — चोरी करना, विद्यालय न जाना, देर से जाना या भाग जाना, विद्यालय सम्पत्ति को हानि पहुँचाना, कक्षा में शोर मचाना, शराब पीना, धूम्रपान करना, एक-दूसरे से लड़ना-झगड़ना व मारपीट करना इत्यादि।

(2) शिक्षण से सम्बन्धित समस्याएँ — ये समस्याएँ छात्र व शिक्षक दोनों से सम्बन्धित हैं। विद्यार्थियों को पाठ्य विषयों को न समझना, गृह कार्य व लिखित कार्य न सम्पन्न करना, शिक्षकों को शिक्षण की उपयुक्त विधियों को न अपनाना, शिक्षण के लिये पूरी तैयारी न करना, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का आपसी तालमेल का न होना।

(3) परीक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ — परीक्षा से सम्बन्धित समस्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः छात्रों से है — प्रामाणिक और वस्तुनिष्ठ न होना, निबंधात्मक प्रकार की परीक्षाओं के कारण विद्यार्थियों का वास्तविक मूल्यांकन न हो पाना, परीक्षा और शिक्षण में समन्वय न होना।

(4) पाठान्तर क्रियाओं से सम्बन्धित समस्याएँ — इससे सम्बन्धित समस्याएँ छात्रों, शिक्षकों, प्रधानाचार्य से सम्बन्धित हैं। जैसे — पाठान्तर क्रियाओं में शिक्षकों द्वारा पर्याप्त समय की कमी, पाठान्तर क्रियाओं के प्रति शिक्षकों की उदासीनता, पाठान्तर क्रियाओं के लिए पर्याप्त साधन न होना, पाठ्यक्रम और सहगामी क्रियाओं के मध्य असन्तुलन।

(5) विद्यालय संगठन एवं प्रशासन से सम्बन्धित समस्याएँ — उनका सम्बन्ध विद्यालय के प्रशासकों एवं अधिकारियों से होता है। जैसे कक्षा-कक्ष साफ और हवादार न होना, कक्षा में पर्याप्त स्थान का अभाव,

— P.T.O. —

13/06/24

कक्षा में सजीव वस्तुओं का अभाव, [illegible] उपकरणों की ठीक व्यवस्था न होना, प्रयोगशाला की उचित व्यवस्था न होना, शिक्षकों परस्पर सहयोग न होना।

क्रियात्मक अनुसंधान पर आधारित प्रायोगिक परियोजना का प्रतिवेदन—

(सामाजिक विज्ञान, ([illegible]))

अनुसंधानकर्ता का नाम—

अनुसंधान निर्देशक का नाम—

अनुसंधान की अवधि—

विद्यालय का नाम — [illegible]

कक्षा — 8

परियोजना का शीर्षक — कौशल के विद्यार्थियों द्वारा [illegible] में [illegible] तथा [illegible] की [illegible] का अध्ययन—

समस्या की पृष्ठभूमि— छात्र अध्यापक [illegible] करते समय यह अनुभव किया कि छात्रों को [illegible] के समय [illegible] और [illegible] का प्रयोग करने की [illegible] कम है। [illegible] यह भी पाया गया कि छात्र मानचित्र [illegible] में [illegible] करते हैं और [illegible] की सही ढंग से [illegible] नहीं करते हैं।

परियोजना का उद्देश्य— छात्र अध्यापक ने अपनी समस्या के अध्ययन हेतु यह परियोजना बनाई जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- छात्रों को मानचित्र एवं [illegible] के महत्व का ज्ञान कराना
- कौशल के अध्ययन के समय छात्रों में [illegible] के प्रयोग करने की रुचि उत्पन्न करना।
- कौशल की [illegible] में छात्रों के [illegible] को बढ़ाना।

[illegible]

[illegible]

- छात्रों को यह बताना कि भूगोल के उपकरणों का प्रयोग करने से उनके ज्ञान को स्थायी बनाया जा सकता है।
- छात्रों को मानचित्र एवं एटलस के प्रयोग द्वारा पाठ्यवस्तु को सरल एवं बोधगम्य बनाना।
- छात्रों को मानचित्र एवं एटलस के प्रयोग में दक्ष बनाना।

परियोजना का महत्व — सामान्यतः यह देखा गया है कि भूगोल विषय जो कि माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में सामाजिक विज्ञान विषय के अन्तर्गत रखा गया है, सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ज्ञान विद्यार्थियों को देना अति आवश्यक है। अतः यह परियोजना भूगोल विषय न पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिये अति महत्वपूर्ण है क्योंकि —

(i) इसके प्रयोग से छात्रों को भूगोल के मानचित्र एवं एटलस के प्रयोग करने की प्रवृत्ति को बढ़ाया जा सकता है।

(ii) इस परियोजना के प्रयोग से छात्रों में प्रायोगिक कार्य के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

(iii) इस परियोजना के द्वारा पाठ्यवस्तु की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है।

(iv) इस परियोजना के माध्यम से पाठ्यवस्तु को सरल एवं स्थायी बनाया जा सकता है।

(v) इस परियोजना के माध्यम से विद्यालय की गुणवत्ता बढ़ाया जा सकता है।

समस्या का अभिकथन — छात्रों द्वारा भूगोल के कालांश (Period) में मानचित्रों एवं एटलस का संतोषजनक ढंग से प्रयोग न किया जाना।

समस्या का परिसीमन — छात्र अध्यापक ने अपनी समस्या के अध्ययन हेतु के०डी० इन्टर महाविद्यालय समस्तीपुर के कक्षा 8 के 30 छात्रों को लिया गया —

समस्या के कारणों का विश्लेषण

क्रमांक	समस्या के सम्भावित कारण	प्रविधियाँ	[illegible]	[illegible]	[illegible] प्राथमिकता क्रम
1.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	II
2.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	III
3.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	I
4.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	III

[illegible]

[illegible]

[illegible]

— [illegible] —

[illegible]

द्वितीय क्रियात्मक परिकल्पना — छात्रों में मानचित्र के भरवाने तथा उनके द्वारा किये गए कार्यों को निरीक्षण करके उनमें मानचित्रों तथा छात्रों से एटलस लाने और उसका सही प्रयोग करने की प्रवृत्ति को विकसित करना।

उपकरणों का चयन — प्रतिपुस्तिका, मानचित्र एवं एटलस सूची, प्रेक्षण, साक्षात्कार एवं स्टॉक रजिस्टर इनमें से कोई एक अथवा एक से अधिक उपकरणों का चयन।

क्रियात्मक परिकल्पनाओं हेतु कार्यविधि —

— छात्र अध्यापक ने प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु निम्न प्रकार से कार्य किया —

क्रम सं०	क्रिया गया कार्य	कार्यविधि	उपयुक्त उपकरण	समयावधि
1.	छात्राध्यापक द्वारा कक्षा की पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित मानचित्रों तथा एटलस की विद्यालय में उपलब्धता की जानकारी ली।	छात्राध्यापक द्वारा भूगोल की प्रयोगशाला का निरीक्षण करके सूची तैयार की गई।	अवलोकन, प्रेक्षण सूची, स्टॉक रजिस्टर	1 दिन
2	आवश्यक मानचित्रों की व्यवस्था की गई।	विद्यालय में उपलब्ध एवं बाजार से मानचित्रों एवं एटलस को खरीद कर।	सूची	1 दिन
3.	शिक्षण के दौरान पाठ से सम्बन्धित मानचित्रों का प्रयोग किया गया।	शिक्षण सामग्री के साथ में रखकर मानचित्रों की सहायता से पाठ का विकास करके।	आवश्यक सामग्री तथा मानचित्र	5 दिन
4.	शिक्षण के उपरान्त एटलस को छात्रों के सामने रखकर भौगोलिक स्थिति को सही ढंग से स्पष्ट किया गया।	छात्रों के सामने एटलस को सही ढंग से प्रदर्शित करके।	एटलस	5 दिन

आरेख के अनुसार 12 दिनों तक प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु छात्राध्यापक ने कार्य किया। उसके अवलोकन के पश्चात उसने पाया कि विद्यालय मानचित्रों की उपलब्धता एवं शिक्षक द्वारा उनके प्रयोग से विद्यार्थी ने शिक्षण में रुचि ली।

द्वितीय क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्यक्रम

क्रमांक	क्रिया अथवा कार्य	कार्य विधि	प्रयुक्त उपकरण अथवा साधन	समयावधि
1.	छात्राध्यापक द्वारा यह पता लगाया गया कि किन-2 विद्यार्थियों के पास एटलस तथा मानचित्र है या नहीं	कक्षा में विद्यार्थियों से पूछकर	प्रतिपृच्छा	1 दिन
2.	विद्यार्थियों को एटलस खरीदकर लाने को कहा गया तथा निर्धन विद्यार्थियों को विद्यालय से सुविधा प्रदान करवायी गई।	विद्यार्थियों को अच्छी एटलस का नाम बताकर तथा विद्यालय से एटलस तथा मानचित्र दिखाकर	अभिभावकों को सूचना	2 दिन
3.	शिक्षण के दौरान मानचित्र तथा एटलस के प्रयोग में रुचि रखने तथा रुचि न रखने वाले छात्रों का पता लगाया गया	शिक्षण के समय छात्रों पर लगातार निरीक्षण रखकर।	प्रेक्षण	2 दिन
4.	छात्रों को मानचित्र भरने तथा एटलस का प्रयोग करके सम्बन्धित निर्देश दिये गए।	पुनः छात्र को मानचित्र भरने तथा एटलस के सही ढंग से प्रयोग करने के बताकर।	मानचित्र तथा एटलस	3 दिन

P.T.O.

14/08/2020

क्रम सं.	क्रियाकलाप	कार्यविधि	उपयुक्त उपकरण	समयावधि
5.	छात्रों से मानचित्रों में स्थानों, नगरों आदि का अंकन कराया गया तथा एटलस में भौगोलिक स्थानों को चिह्नित करने को कहा गया एवं निरीक्षण किया गया।	पाठ्योजनाओं से सम्बन्धित चित्रों को बनाकर एवं निरीक्षण करके।	मानचित्र, एटलस तथा अन्य आवश्यक सामग्री	1 दिन

उपरोक्त के अनुसार छात्राध्यापक ने 13 दिनों तक द्वितीय क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य किया और अवलोकन के माध्यम से विद्यार्थियों में गुणात्मक सुधार हुआ। छात्र कक्षा में रुचि लेने लगे।

<u>परिणाम</u>— छात्राध्यापक ने भूगोल विषय के विद्यार्थियों द्वारा मानचित्रों तथा एटलस का संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृत्ति को हटाने हेतु लगभग 25 दिनों तक दो क्रियात्मक परिकल्पनाओं के अनुरूप कार्य किया।

<u>परियोजना का मूल्यांकन</u>— छात्राध्यापक ने लगभग 25 दिनों तक इस परियोजना पर कार्य करने तथा किये गये कार्यों का अवलोकन करने के पश्चात् विद्यार्थियों एवं अन्य साथी शिक्षकों साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़े एकत्र किये। एकत्रित आँकड़ों के अवलोकन के पश्चात् उसने पाया कि परियोजना के क्रियान्वयन से कक्षा 8 के भूगोल विषय के विद्यार्थियों में काफी सुधार आया।

<u>निष्कर्ष</u>— परियोजना के उपरोक्त मूल्यांकन के आधार पर हम कह सकते हैं कि छात्रों को उचित निर्देशन

P.T.O.

देकर उनके कार्यों का निरीक्षण करके, उनके द्वारा स्वयं कार्य करवाकर सामने आने वाली समस्याओं का समाधान किया जा ~~सके~~ सकता है।

सुझाव — अशोक मूल्यांकन के आधार पर ~~हम कह सकते हैं कि~~ सभी व्यक्तियों को निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं —

- शिक्षक को भूगोल ~~में~~ के शिक्षण में रोचकता उत्पन्न करना चाहिए।
- छात्रों को मानचित्र बनाने का अभ्यास करवाना चाहिए।
- भूगोल विषय को मानचित्र व एटलस की सहायता पढ़ाना चाहिए।
- विद्यालय में सभी उपकरणों की सुविधा होनी चाहिए।
- छात्रों को मानचित्रों की उपयोगिता बताकर उन्हें इसकी प्रयोग हेतु प्रेरित करें।

परियोजना का बजट —

पुस्तक की खरीद में	— रु-1000
मानचित्र एवं एटलस की खरीद में	— रु-600
अन्य सामग्री	— रु-100
अन्य खर्च	— रु-100
कुल व्यय	— रु=1800

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन के अन्य दोनों पीरिएड एवं मिनमैप्स ~~ह~~ सही हैं। [signature] 17/06/2020